भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2023-2024)

कक्षा 10	विषय – हिंदी (पाठ्यक्रम-ब)	Date – 10-05-2023
प्रश्न बैंक	पाठ: डायरी का एक पन्ना (सीताराम सेकसरिया)	Note: Pl. file in portfolio

नाम: ________________________अनुभाग: _____अनुक्रमांक: _____दिनांक: ____________

1. कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी, 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था?

उत्तर: 26 जनवरी, 1931 का दिन कलकत्तावासियों के लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि सन् 1930 में गुलाम भारत में पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। इस वर्ष उसकी पुनरावृत्ति थी, जिसके लिए काफ़ी तैयारियाँ पहले से ही की गई थीं। इसके लिए लोगों ने अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया था और उन्हें इस तरह से सजाया गया था कि ऐसा मालूम होता था, मानों स्वतंत्रता मिल गई हो।

2.सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उत्तर:सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था जिन्होंने इस जुलूस का पूरा प्रबंध किया था उन्होंने जगह-जगह फोटो का भी प्रबंध किया था और बाद में पुलिस द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया था।

3.विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर:विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया तथा अन्य लोगों को मारा और वहाँ से हटा दिया।

4. लोग अपने-अपने मकानों तथा सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर क्या संकेत देना चाहते थे?

उत्तर: लोग अपने-अपने मकानों तथा सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर आज़ादी की भावना का संकेत देना चाहते थे।

5. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

उत्तर: पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को इसलिए घेर लिया था ताकि लोग वहाँ एकत्रित न हो सकें। पुलिस नहीं। चाहती थी कि लोग एकत्र होकर पार्कों तथा मैदानों में सभा करें तथा राष्ट्रीय ध्वज फहराएँ। पुलिस पूरी ताकत से गश्त लगा रही थी। प्रत्येक मोड़ पर गोरखे तथा सार्जेंट मोटर-गाड़ियों में तैनात थे। घुड़सवार पुलिस का भी प्रबंध था।

6. २६ जनवरी, १९३१ को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई थीं?

उत्तर: 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए निम्नलिखित तैयारियाँ की गईं

I) कलकत्ता के लोगों ने अपने-अपने घरों को खूब सजाया।

II) अधिकांश मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया।

III) कुछ मकानों और बाज़ारों को ऐसे सजाया गया कि मानो स्वतंत्रता ही प्राप्त हो गई हो।

IV) कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लहराए गए।

V) लोगों ने ऐसी सजावट पहले नहीं देखी थी।

7. 'आज जो बात थी, वह निराली थी।' - किस बात से पता चलता है कि आज का दिन निराला था?

उत्तर: लोगों की तैयारी और उनका जोश देखते ही बनता था। एक तरफ़ पुलिस की पूरी कोशिश थी कि स्थिति उनके काबू में रहे, तो दूसरी ओर लोगों का जुनून पुलिस की कोशिश के आगे भारी पड़ रहा था। हर पार्क तथा मैदान में भारी संख्या में लोग इकट्ठा हुए थे। जोश भरा माहौल बता रहा था कि वह दिन वाकई निराला था।

8. पुलिस कमिश्नर के नोटिस और काउंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उत्तर: पुलिस कमिश्नर का नोटिस सभा और आज़ादी के जश्न को रोकने के लिए था। उसमें कहा गया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे, उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। दूसरी तरफ काउंसिल का नोटिस लोगों का आह्वान कर रहा था कि वे भारी संख्या में आकर आज़ादी का उत्सव मनाएँ। मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी। दोनों नोटिस एक दूसरे के विरोधाभासी थे।

9. धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर: सुभाष बाबू के नेतृत्व में जुलूस पूरे जोश के साथ आगे बढ़ रहा था। थोड़ा आगे बढ़ने पर पुलिस ने सुभाष बाबू को पकड़ लिया और गाड़ी में बिठाकर लाल बाज़ार के लॉकअप में भेज दिया। जुलूस में भाग लेनेवाले आंदोलनकारियों पर पुलिस ने लाठियाँ बरसानी शुरू कर दी थीं। बहुत से लोग बुरी तरह घायल हो चुके थे। पुलिस की बर्बरता के कारण जुलूस बिखर गया था। मोड़ पर पचास-साठ स्त्रियाँ धरना देकर बैठ गईं थीं। पुलिस ने उन्हें पकड़कर लालबाज़ार भेज दिया था।

10. डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देखभाल तो कर ही रहे थे, उनकी फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। फ़ोटो उतारने की क्या वजह हो सकती है?

उत्तर: फ़ोटो उतरवाने का एक ही मक़सद हो सकता है। प्रेस में घायलों की फ़ोटो जाने से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के स्वाधीनता संग्राम को प्रचार मिल सकता था। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपनाई गई बर्बरता को भी दिखाया जा सकता था।

11. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री-समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर: सुभाष बाबू के जुलूस में सुभाष बाबू को तो शुरू में ही पकड़ लिया गया था। उसके बाद स्त्रियों ने पूरी तरह से जुलूस को आगे बढ़ाने का ज़िम्मा ले लिया था। धर्मतल्ले के मोड़ पर 50-60 स्त्रियों ने धरना दे दिया। आखिर में क़रीब 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं। जिस तरह से स्त्रियों ने

जुलूस के तितर-बितर होने के बाद भी मामले को आगे बढ़ाया, उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि स्त्रियों ने बख़ूबी उस दिन अपना योगदान दिया था।

12. जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

उत्तर: जुलूस के लालबाज़ार आने पर पुलिस ने एकत्रित भीड़ पर लाठियों से प्रहार किया। सुभाष बाबू को पकड़कर लॉकअप में भेज दिया गया। स्त्रियों का नेतृत्व करनेवाली मदालसा भी पकड़ी गई थी। उन्हें थाने में मारा भी गया । इस जुलूस में लगभग 200 व्यक्ति घायल हुए जिसमें से कुछ की हालत गंभीर थी।

13. “जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है, तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए एक ओपन लड़ाई थी।” यहाँ पर कौन-से और किसके कानून के भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में बताइए।

उत्तर: प्रस्तुत कथन में अंग्रेज़ों द्वारा लगाए गए प्रतिरोध को भंग करने की बात की गई है। पाठ में जिस तरह से आज़ादी के जोश का चित्रण हुआ है, उससे स्पष्ट होता है कि उस माहौल में कानून भंग करना उचित था।

14. बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉक-अप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है?

उत्तर: हमारे विचार में 26 जनवरी 1931 का दिन अद्भुत था क्योंकि इस दिन कलकतावासियों को अपनी देशभक्ति, एकता व साहस को सिद्ध करने का अवसर मिला था। उन्होंने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस पूरे जोश और उत्साह के साथ मनाया। अंग्रेज़ प्रशासकों ने इसे उनका अपराध मानते हुए उनपर और विशेष रूप से महिला कार्यकर्ताओं पर अनेक अत्याचार किए लेकिन पुलिस द्वारा किया गया क्रूरतापूर्ण व्यवहार भी उनके इरादों को बदल नहीं सका और न ही उनके जोश कम कर पाया । एकजुट होकर राष्ट्रीय झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा करने का जो संकल्प उन सबने मिलकर लिया था उसे उन्होंने यातनाएँ सहकर भी उस दिन पूरा किया।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए:

1. आज जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

उत्तर: उस सभा के पहले कलकत्ता में पहले कभी लोगों ने इतना बढ़-चढ़ कर स्वाधीनता-संग्राम में हिस्सा नहीं लिया था। इस कारण से कुछ लोग हमेशा कलकत्ता पर यह आरोप लगाते थे कि वहाँ के लोग गुलामी को ही पसंद करते हैं। लेकिन उस दिन जो कुछ हुआ, उससे कलकत्ता के नाम पर लगा दाग़ धुलने में बहुत सहायता मिली होगी।

2. खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति का यह आशय है कि जब 26 जनवरी सन् 1931 के दिन कलकत्ता में स्थान-

स्थान पर झंडोत्सव मनाए गए तो ब्रिटिश सरकार को यह बात मान्य नहीं थी इसलिए उन्होंने भारतीयों पर अनेक जुल्म किए। कलकत्ता के इतिहास में यह पहली बार हुआ था कि पुलिस कमिश्नर दूद्वारा निकाले गए नोटिस के बावजूद भी कौंसिल द्वारा उन्हें खुली चुनौती दी गई कि न केवल एकजुट होकर झंडा फहराया जाएगा अपितु स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा भी पढ़ी जाएगी। पुलिस द्वारा यह नोटिस भी जारी किया गया कि इन सभाओं में भाग लेनेवालों को दोषी समझा जाएगा तब भी बड़ी संख्या में न केवल पुरुषों ने बल्कि स्त्रियों ने भी जुलूस में भाग लिया और सरकार द्वारा बनाए गए कानून को भी भंग किया। आजादी के इतिहास में ऐसी खुली चुनौतियाँ देकर पहले कभी कोई सभा आयोजित नहीं हुई थी।

अतिरिक्त प्रश्न: 1. 'शायद पुलिस अपना रंग न दिखलावे पर वह कब रुकने वाली थी' - इस पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर: अंग्रेज़ पुलिस अपनी बर्बरता और निर्दयता के लिए प्रसिद्ध थी। 26 जनवरी, 1931 के दिन जब मॉन्युमेंट के पास 4:24 पर झंडा फहराया जाना था तो दोपहर के समय पुलिस कुछ सुस्त दिखी। पुलिस लोगों को रोक-टोक नहीं रही थी। इससे लोगों को आशा हो गई थी कि अब शायद क्रांतिकारियों को सरलता से अपना प्रदर्शन करने देगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पुलिस ने बाद में क्रांतिकारियों पर निर्दयतापूर्वक लाठियाँ बरसाई थीं जिससे अनेक लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे ।

2. स्वतंत्रता आंदोलन में विद्यार्थियों की क्या भूमिका थी?

उत्तर: विद्यार्थियों की भूमिका भी सराहनीय थी। मारवाड़ी बालिका विद्यालय जैसे अनेक विद्यालयों में लड़कियों ने झंडोत्सव मनाया था। उन्हें जानकी देवी, मदालसा जैसी नेत्रियों ने संबोधित किया था। बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने भी झंडा फहराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इससे सिद्ध होता है कि स्वतंत्रता-संघर्ष में विद्यार्थियों का भी भरपूर योगदान था।

3. वृजलाल गोयनका का परिचय दीजिए ।

उत्तर: वृजलाल गोयनका कांग्रेस का एक कार्यकर्ता था । वह लेखक के साथ काफ़ी समय से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दे रहा था। वह लेखक के साथ दमदम जेल में भी था। 26 जनवरी, 1931 को जब कोलकाता में जुलूस निकला तो वह भी उसमें शामिल था। वह झंडा लेकर 'वंदे मातरम्' बोलता हुआ मॉन्युमेंट की ओर तेज़ी से दौड़ा किंतु अपने आप ही गिर पड़ा। उसे एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी मारी और फिर पकड़ कर कुछ दूर ले जाकर छोड़ दिया। इसके बाद वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और उसे वहाँ भी पकड़ कर छोड़ दिया गया। तब वह 200 आदमियों का जुलूस बनाकर फिर प्रदर्शन करने लगा तो उसे गिरफ़्तार कर लिया गया।

4. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर बड़े बाज़ार के दृश्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर: बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कोलकाता के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से लोग जाते थे, उसी रास्ते उत्साह और नवीनता मालूम

होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताक़त से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लॉरियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लॉरियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रैफ़िक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। लेखक ने सरल शैली में बाज़ार का प्रभावशाली दृश्य प्रस्तुत किया है।

5. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ क्या संदेश देता है?

उत्तर: प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की कामना करने वाले उन्हीं अनंत लोगों में से एक थे। वह दिन-प्रतिदिन जो भी देखते, सुनते और महसूस करते थे, उसे अपनी निजी डायरी में दर्ज़ कर लेते थे। यह क्रम कई वर्षों तक चला। इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी, 1931 का लेखा-जोखा है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस और स्वयं लेखक सहित कोलकाता के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस किस जोश-खरोश से मनाया, अंग्रेज़ प्रशासकों ने इसे उनका अपराध मानते हुए उन पर और विशेषकर महिला कार्यकर्ताओं पर कैसे-कैसे ज़ुल्म ढाए, यही सब इस पाठ में वर्णित है। यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की क़ुर्बानियों की याद तो दिलाता ही है, साथ ही यह भी उजागर करता है कि एक संगठित समाज कृतसंकल्प हो तो ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके।